Leadership, Education, Personality: An Interdisciplinary Journal ISSN: 2524-6178
www.sibe.rpress.co.in, Vol. 19, Issue 04 Sep 2024,

सांगीतिक एवं सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन में भारत सरकार की भूमिका

डॉ0 अम्बिका कश्यप
एसोसिएट प्रोफेसर
गुरू नानक गर्ल्ज कॉलेज
यमुनानगर।

भारतीय संगीत एक ऐसी विशिष्ट कला है जो प्राचीन काल से ही मानव को सांस्कृतिक परम्पराओं एवं पुरातन कलाओं के साथ जोड़ता आ रहा है। यद्यपि कला का आरम्भ व्यक्ति के भावों को प्रकट करने की अभिलाषा के साथ ही होता है तथा संगीत उसका सर्वोत्तम माध्यम है। इसीलिये संगीत को अन्य ललितकलाओं में सर्वश्रेष्ठ माना जाता रहा है, जो मानव समाज के लिए अमूल्य निधि है। कोई भी कला क्यों न हो समाज से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं होता। किसी भी जनसमाज की कला उसकी मानसिकता से निर्धारित होती है। समाज की राजनैतिक व आर्थिक परिस्थितियां सदैव एक सी नहीं रहती। वह मानव अस्तित्व के व्यापक संघर्ष और मानवीय श्रम के परिणाम स्वरूप बदलतीरहती है और निरंतर नये युगों का निर्माण करती रहती हैं। भारत वर्ष की संगीत कला भी सदैव परिवर्तनशील रही है। इसी बदलाव के कारण समाज में संगीतकला के व्यापक प्रचार–प्रसार की आवश्यकता भी सदैव बनी रही है।

संगीत एवं कलाओं के विकास की दृष्टि से दो ही साधन मुख्य माने गये हैं। पहला समाज और दूसरा प्रशासन। यद्यपि समाज ने अपने रीति–रिवाज़ों, संस्कारों आदि को संगीत के माध्यम से जीवित रखने का प्रयास किया है। संगीत ने ही समाज को मानवता का पाठ पढ़ाया है। इसीलिये समाज में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। इस भारतीय संगीत एक ऐसी विशिष्ट कला है जो प्राचीन काल से ही मानव को सांस्कृतिक परम्पराओं एवं पुरातन कलाओं के साथ जोड़ता आ रहा है। यद्यपि कला का आरम्भ व्यक्ति के भावों को प्रकट करने की अभिलाषा के साथ ही होता है तथा संगीत उसका सर्वोत्तम माध्यम है। इसीलिये संगीत को अन्य ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ माना जाता रहा है, जो मानव समाज के लिये अमूल्य निधि है।

कोई भी कला क्यों न हो समाज से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं होता। किसी भी जनसमाज की कला उसकी मानसिकता से निर्धरित होती है। समाज की राजनैतिक व आर्थिक परिस्थितियां सदैव एक सी नहीं रहती। वह मानव अस्तित्व के व्यापक संघर्ष और मानवीय श्रम के परिणाम स्वरूप बदलती रहती है और निरंतर नए युगों का निर्माण करती रहती हैं। भारत वर्ष की संगीतकला भी सदैव परिवर्तनशील रही है। इसी बदलाव के कारण समाज में संगीतकला के व्यापक प्रचार–प्रसार की आवश्यकता भी सदैव बनी रही है। संगीत एवं कलाओं के विकास की दृष्टि से दो ही साधन मुख्य माने गये हैं। पहला समाज और दूसरा प्रशासन। यद्यपि समाज ने अपने रीति–रिवाज़ों, संस्कारों आदि का संगीत के माध्यम से

जीवित रखने का प्रयास किया है। संगीत ने ही समाज को मानवता का पाठ पढ़ाया है। इसीलिये समाज में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संगीत को समृद्ध करने में अनेक गायकों,वादकों, नर्तकों, संगीतकारों का विनियोग है न कि व्यक्ति विशेष का। उनकी अथक साधना से ही संगीत जन–जन तक पहुँचा व संगीत, समाज में विशेष स्थान कायम कर पाया। कला व कलाकार का भरपूर सम्मान होने लग। कला अपनी उत्तम कृति को प्राप्त होने लगी। फिर ऐसा दौर भी आया जब चाहे कुछ भी रहे हो, भारतीय संगीत एक निश्चित सीमा तक सिमटकर रह गया व समाज में इसका स्थान गौण हो गया। इस तरह संगीत में उत्थान–पतन का क्रम चलता व बदलता रहा।

भारतीय संगीत के उत्थान में अनेक संगीत सेवी सरकारी, गैर–सरकारी संस्था, भारत में नवगठित सरकार ने काम कर रही है। इनमें से कुछ कार्यक्रम आयोजित करती है, कुछ संगीत की परीक्षाए चलाती है, कुछ पाठ्यक्रम पर आधरित शिक्षा देती है तो कुछ गुरु–शिष्य परम्परा की पद्धति से चुने हुये विद्यार्थियों को उस्तादों से तालीम दिलवा रही है।

सरकार का मुख्य उद्देश्य आज के युवाओं को भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के मूल रूप सें अपनी धरोहर से परिचित कराना है। ताकि वे अपनी संस्कृति के गरिमापूर्णसौंदर्य एवं समृद्ध कलाओं की वैभवशाली महिमा को सिर्फ जाने ही नहीं, आत्मसात् भी करें। उसके प्रति संवेदनशील रहकर समन्वयवादी मानवीयता के मूल चिंतन का आधार पा सकें और भविष्य में किसी भी क्षेत्र में जाकर अपनी अस्मिता एवं जड़ोंसे जुड़े रहकर आत्मबल से भरपूर रहे। भारतीय शास्त्रीय संगीत हजारों साल से मानवीय अभिव्यक्ति का मुख्य साधन रहा है

भारतीय संस्कृति विरासत के गहन चिंतनदर्शन को विभिन्न शास्त्रीय विधाओं व कलाकारों के माध्यम से युवा वर्ग को जागृत व प्रेरित करना चाहता है। सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन में सरकार ने अपनी भूमिका का महत्वपूर्ण विस्तार किया है। उसने अलग–अलग समारोहों से हटकर दीर्घकालिक संस्था निर्माण और वैश्विक सांस्कृतिक नेतृत्व की ओर रणनीतिक बदलाव किया है। इस रणनीति का केंद्रबिंदु है 'विकसित भारत विज़न' 2047, जो कि पांच स्तंभों पर आधारित है। 10,000 से अधिक वर्षों की विरासत का संरक्षण, जन भागीदारी के माध्यम से सभी की पहुंच को लोकतांत्रिक बनाना, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना, रचनात्मक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना और भारत को वैश्विक सांस्कृतिक शक्ति के रूप में स्थापित करना (विश्वबंधु)।

Establishment of Kalagrams : महाकुंभ 2025 के दौरान प्रयागराज कलाग्राम की सफलता के बाद, सरकार देशभर में 20 कलाग्राम स्थापित कर रही है। ये कलाग्राम कलाकारों और शिल्पकारों के लिए रचनात्मक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाले जीवंत केंद्र के रूप में कार्य करेंगे।

National Mission on Cultural Mapping (NMCM) इस पहल के तहत 45 लाख गांवों में सांस्कृतिक धरोहरों का मानचित्रण किया जा चुका है, जिससे कलाकारों, कला रूपों और विरासत प्रथाओं का एक व्यापक डेटाबेस तैयार हुआ है।

Gyan Bhratam Mission: सन् 2025 ई0 में शुरू किया गया यह राष्ट्रीय मिशन, भारत की हस्तलिखित विरासत के संरक्षण, डिजिटलीकरण और प्रसार पर केंद्रित है, जिसमें प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित करने के लिए एक समर्पित डिजिटल पोर्टल भी शामिल है। पांडुलिपियों पर केंद्रित यह ₹491.66 करोड़ का मिशन प्राचीन संगीत ग्रंथों (शास्त्रों) को भी डिजिटाइज़ करता है, जिससे रागों और तालों का मूलभूत ज्ञान शोधकर्ताओं के लिए एआई–समर्थित पोर्टल के माध्यम से सुलभ हो जाता है।

Expansion of Classical Languages : अक्टूबर 2024 में, सरकार ने पांच और भाषाओं – असमिया, मराठी, पाली, प्राकृत और बंगाली को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया, जिससे कुल संख्या 11 हो गई

Indian Classical Music (ICM) को एक पारंपरिक प्रदर्शन कला से ऊपर उठाकर राष्ट्रीय पहचान और वैश्विक कूटनीति के लिए एक रणनीतिक संपत्ति का दर्जा दिया गया है।

Institutional Support & Training

Strengthening Guru Shishye Parampara : कला संस्कृति विकास योजना (KSVY) के तहत, सरकार मौखिक परंपराओं की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए गुरुओं ₹15,000 और उनके शिष्यों ₹2,000–₹10,000 को मासिक वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

Scholarships for Young Artistes: संस्कृति मंत्रालय भारतीय शास्त्रीय संगीत और सुगम शास्त्रीय रूपों में उन्नत प्रशिक्षण के लिए प्रतिवर्ष 400 युवा कलाकारों (18–25 वर्ष की आयु) को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करता है।

New Regional Center: दक्षिण भारत सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना हाल ही में हैदराबाद (2024) में की गई है, जिसमें शास्त्रीय संगीत के लिए समर्पित भारत कला मंडपम सभागार है।

Digital Preservation and Public Engagement

National Destination Digital Knowledge Grid: राष्ट्रीय सांस्कृतिक श्रव्य दृश्य अभिलेखागार NCCA (National Commission for Culture & Arts) यह शास्त्रीय संगीत के उस्तादों की दुर्लभ रिकॉर्डिंग को सक्रिय रूप से डिजिटाइज़ कर एक स्थायी संग्रह तैयार कर रही है।

New Regional Centers: संगीत इतिहास से संबंधित वाद्ययंत्रों और कलाकृतियों को संग्रहालयों में डिजिटाइज़ किया जा रहा है ताकि शास्त्रीय संगीत की मूर्त विरासत को संरक्षित किया जा सके।

Performance Platforms and Public Engagement –

National Festivals संगीत नाटक अकादमी (SNA) शक्ति महोत्सव और कला प्रवाह जैसे प्रमुख कार्यक्रमों का आयोजन करती है ताकि स्थापित और उभरते नवोदित शास्त्रीय संगीतकारों को राष्ट्रीय मंच प्रदान किया जा सके।

Jan Bhagidari जन भागीदारी महाकुंभ सन् 2025 ई0 में कलाग्राम जैसे बड़े आयोजनों ने आध्यात्मिक सभाओं में शास्त्रीय संगीत को एकीकृत किया, जिससे लाखों तीर्थयात्रियों को पारंपरिक कला रूपों से परिचित होने का अवसर मिला।

Recognition of Craftsman कारीगरों को मान्यता : समग्र संरक्षण की दिशा में एक कदम बढ़ाते हुए, सरकार ने कला से जुड़े उद्योग के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए, मिरज के प्रसिद्ध केंद्र जैसे संगीत वाद्ययंत्र निर्माताओं को विशेष रूप से सम्मानित करना शुरू कर दिया है।

Festival of India in Abroad:

भारत सरकार की सभ्यतागत समृद्धि को रूस, अजरबैजान और दक्षिण अफ्रीकी संघ के सदस्य देशों जैसे देशों में प्रदर्शित करने के लिए ''Festival of India" के बैनर तले ICM मंडलों को अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन करने के लिए पूर्ण रूप से वित्त पोषित करती है।

Global Engagement Scheme

National Recognition and वैश्विक सहभागिता योजना यह योजना सूचीबद्ध शास्त्रीय संगीतकारों को अंर्तराष्ट्रीय दौरों और सहयोगी सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए प्रायोजित करती है।

Direct Finacial Support for Artists: कलाकारों के लिए प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता

गुरु–शिष्य परंपरा (रेपर्टरी अनुदान) संस्कृति मंत्रालय की यह योजना पारंपरिक प्रशिक्षण को जारी रखने के लिए मासिक मानदेय प्रदान करती है। गुरु प्रति माह ₹15,000 की राशि प्राप्त करते हैं। शिष्य आयु के आधार पर अलग–अलग सहायता प्राप्त करते हैं। वयस्क शिष्यों (18) को ₹10,000 मिलते हैं, जबकि युवा छात्रों (3–18 वर्ष की आयु) को ₹2,000 से ₹7,500 के बीच मिलते हैं।

दायरा संगीत के क्षेत्र में, एक गुरु एक साथ अधिकतम 10 शिष्यों को प्रशिक्षित कर सकता है। किसी गुरु या संस्था के मार्गदर्शन में कम से कम 5 वर्ष का पूर्व प्रशिक्षण आवश्यक है।

आवेदन सांस्कृतिक संसाधन एवं प्रशिक्षण केंद्र (CCRT) द्वारा प्रबंधित :

CTSSS (CULTURAL TALENT SEARCH SCHOLARSHIP SCHEME: (आयु 10–14) सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति असाधारण रूप से प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान करती है। लाभ ₹3,600 प्रति वर्ष, साथ ही किसी मान्यता प्राप्त गुरु के मार्गदर्शन में विशेष प्रशिक्षण के लिए ₹9,000 तक की वार्षिक शिक्षण शुल्क प्रतिपूर्ति।

National Recognition & Research :

संगीत नाटक अकादमी (SNA) पुरस्कार: ये प्रदर्शन कलाकारों के लिए सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान हैं।

- अकादमी रत्न (फेलोशिप)रू ₹3.00 लाख की राशि प्रदान की जाती है।
- अकादमी पुरस्कार (अवार्ड)रू ₹1.00 लाख की राशि प्रदान की जाती है।
- उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार विशेष रूप से 40 वर्ष से कम आयु के युवा कलाकारों के लिए।

Tagore National Fellowship: टैगौर राष्ट्रीय फैलोशिप उन्नत सांस्कृतिक अनुसंधान के उद्देश्य से, वरिष्ठ फैलोशिप प्राप्तकर्ताओं को प्रमुख सांस्कृतिक संस्थानों के साथ काम करने के लिए प्रति माह ₹80,000 तक की राशि प्रदान की जाती है।

Global Promotion

Lata Mangeshkar Scholarship भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आईसीसीआर) भारतीय विश्वविद्यालयों में भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन करने के लिए अंर्तराष्ट्रीय छात्रों को 100 वैश्विक सीटें प्रदान करती है।

Media Outreach

Har Kanth Mein Bharat हर कंठ में भारत आकाशवाणी और संस्कृति मंत्रालय के बीच हाल ही में हुए 15 एपिसोड के सहयोग से 21 राष्ट्रीय स्टेशनों पर विभिन्न प्रकार के हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत प्रदर्शनों का प्रदर्शन किया गया। छात्रवृत्तियों और प्रत्यक्ष प्रदर्शन अनुदानों के अलावा, सरकार ने भारतीय शास्त्रीय संगीत (आईसीएम) के संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को समर्थन देने के लिए कई विशेष पहलें शुरू की हैं, जिनमें वाद्य यंत्र निर्माण से लेकर शहरी विकास तक शामिल है

Support for Instrument Makers Urban Cultural Recognition

यंत्र एवं वाद्य निर्माताओं के लिए सहायता

पीएम विश्वकर्मा योजना (2023–2028) लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय की यह प्रमुख योजना सितार, वीणा और तबला जैसे शास्त्रीय वाद्य यंत्रों के निर्माताओं सहित पारंपरिक कारीगरों को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करती है। वित्तीय सहायता की रियायती ब्याज दर पर ₹3 लाख तक का बिना गारंटी वाला ऋण। आधुनिकीकरण हस्तनिर्मित वाद्य यंत्रों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आधुनिक उपकरण खरीदने हेतु ई–वाउचर के रूप में ₹15,000 का टूलकिट प्रोत्साहन। कौशल विकास शिल्प को युवा पीढ़ियों के माध्यम से जीवित रखने के लिए ₹500 के दैनिक वजीफे के साथ बुनियादी और उन्नत प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

Unesco Creative Cities Network(UCCN) :

सरकार ने 2023 के अंत में ग्वालियर को यूनेस्को द्वारा City of Music के रूप में सफलतापूर्वक नामित किया। यह पद्नाम ग्वालियर की शहरी विकास रणनीति में संगीत को एकीकृत करता है, जिससे स्थानीय शास्त्रीय संगीतकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय आदान–प्रदान और व्यावसायिक अवसरों को बढ़ावा मिलता है। 'संगीत सत्र' और 'उत्सव वाराणसी' और चेन्नई जैसे अन्य शहर इस नेटवर्क का हिस्सा हैं, जिन्हें वार्षिक संगीत सत्र आयोजित करने के लिए राज्य का समर्थन प्राप्त है, जो वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करते हैं और सैकड़ों शास्त्रीय कलाकारों को मंच प्रदान करते हैं।

Digitizing Ancient Knowledge

National Digital Manuscripts Library : रागों और तालों के सैद्धांतिक आधारों को भौतिक क्षय से बचाते हुए, इन अभिलेखों को संग्रहित करने के लिए एक समर्पित डिजिटल पुस्तकालय स्थापित किया जा रहा है।

Support for Veteran Artists

वयोवृद्ध कलाकारों के लिए वित्तीय सहायता 'कला संस्कृति विकास योजना' के तहत, सरकार 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के उन कलाकारों को ₹6,000 तक की मासिक पेंशन प्रदान करती है। जिन्होंने कला जगत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है लेकिन आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

- Academic Integration
- **Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA)**

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) यह राष्ट्रीय सांस्कृतिक श्रव्य दृश्य अभिलेखागर के प्राथमिक संग्रह के रूप में कार्य करता है, जिसमें शास्त्रीय संगीत के उस्तादों द्वारा प्रस्तुत हजारों घंटों के उच्च–परिभाषा प्रदर्शनों को शैक्षणिक उपयोग के लिए संग्रहित किया जाता है।

Zonal Cultural Centres (ZCCs): ये क्षेत्रीय निकाय ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव आयोजित करते हैं ताकि शास्त्रीय संगीत को हाशिए से बाहर निकाला जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह शहरी अभिजात वर्ग से परे दर्शकों तक पहुंचे।

इस तरह भारतीय सरकार हर संभव प्रयास कर रही है जिससे आने वाले समय में भारत की समृद्ध एवं सम्पन्न परंपरा को युवा वर्ग और संग्रहित कर सुदृढ़ बना सकें।

सदर्भ ग्रन्थ सूची

- https://www.google.com/search?q=preservation+and+promotion+of+Indian+Classiacal+by+government+of+india+in+hindi&rlz=1C1GCEB_enIN1207IN1207&oq=&gs_lcrp=EgZjaHJvbWUqCQgCEEUYOxjCAzIJCA
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2153597&reg=3&lang=2
- परांजपे शरतचन्द्र श्रीधर – संगीत बोध
- शर्मा देवदत – संगीत सुधाकर
- गर्ग लक्ष्मीनारायण 'बसंत' –संगीत विशारद
- परांजपे शरतचन्द्र श्रीधर – भारतीय संगीत का इतिहास
- मिश्रा विजय शंकरः अंर्तनाद सुर और साज़